सन्त साहित्य में भक्ति–तत्व

डॉ. सूक्ष्म कालिया
प्रवक्ता (संस्कृत), बजीर राम सिंह राजकीय महाविद्यालय, देहरी, (कांगड़ा) हिमाचल प्रदेश, भारत

Abstract

The literature written by saints of India contains the features of bhakti(devotion). The saints like Kabir, Raheem, Nanak, Tukaram, Raidas, Dadu and many more written about the devotion. They showed the ways to reach God and live a better life. The saying of the saints changed the earlier concepts and patterns about devotion. An effort has been made in this article to analyze the features of devotion with the help of the verses and shalokas mentioned in saint literature.

भरम भूमि ऋषियों, मुनियों, भक्तों और अवतारों की जन्म भूमि है।

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानि र्भवति भारत। अभ्युत्थानम धर्मस्य तदा त्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे–युगे।।

जब धर्म का विनाश और अधर्म का अभ्युदय होता है तब तब मैं साधुओं के परिश्राण और दुष्टों के विनाश के लिए समय–समय पर व्यचलित हुए धर्म के संस्थापनार्थ प्रकट होता हूँ। सन्त साहित्य में ऐसे अनेकों भक्त हुए हैं जो अपने उपदेशों द्वारा संसार का कल्याण कर गए हैं और ईश्वर की दरगाह में ऐसे परवान हुए हैं जैसे पानी में पानी मिल जाता है वे परमात्मा की ज्योति से ज्योति मिला कर धुल गए हैं।

जिसने अन्तिम सत्य का अनुभव कर लिया है वही सन्त है। सन्त मत के अन्तर्गत कबीर, रविदास नानक, नामदेव, तुकाराम, दादू आदि हुए। कबीर के दोहे एवं साखियां, रविदास के भाव, दादू का मन्तत्वय, गुरूनानक जी का सतनाम जाप आज भी ग्रामीणों के ह्रदय में बसता है। कबीर ने भक्ति तत्व का सार समझाते हुए कहा है यह सारा संसार पांच शत्रुओं काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार से बर्बाद हो चुका है इसलिए तुम अपने राम को मत खोना। कबीर जी विभिन्न क्षेत्रों में क्रांन्ति के समर्थक थे, आडम्बरों के विरोधी थे और मानवता को सन्मार्ग दिखाने के लिए मसीहा बन कर आये थे। सन्त रविदास ने अज्ञानता के अन्धकार में भटक रही जनता को भक्ति का सरल और स्पष्ट उपदेश देते हुए कहा– हे मूर्ख बालों को संवार कर, पगड़ी टेढ़ी बांधकर बड़े अकड़ कर चलता तो है, तुम्हारे शरीर ने एक दिन मिट्टी में मिल जाना है। हे ऊंचे मन्दिरों, शीश महलों में रहने वालो, प्रभु के सुमिरन के बिना तुम्हारा कल्याण नहीं हो सकता।

तोही मोही, मोही वोही अतरुँ कैसा। कनक कटिक जल तरंग जैसा।।

नामदेव के मतानुसार ईश्वर की एकाग्रचित भक्ति से ही मनुष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। गुरुनानक देव जी सबको एक ही बात बताते हुए कहते हैं कि मन, चित, बुद्धि का संगम करके, उसे एक ही ईश्वर के चरणों मे लगा देना ही सच्ची त्रिवेणी है। इन्होंने समाजिक जीवन की श्रेष्ठता को बनाए रखकर ईश्वर साधना करना उचित माना है। मोक्ष प्राप्ति के लिए घर बार त्याग कर जगंलों में भटकते की जरूरत नहीं है ईश्वर की ज्योति तो तुम्हारे अन्दर ही है।

सन्तों के भजनों तथा उपदेशों से लोगों को ऐसी शिक्षा मिलती है, जिससे उनकी शकांओं, समस्याओं का सन्तोषजनक समाधान हो जाता है। कबीर, रैदास, नानक, नामदेव, दादू ने जिन भक्ति, तत्त्वों का निर्देश किया, वह वर्तमान युग में हम सबके लिए एक सर्वोकृष्ट वरदान हैं।

देखते ही देखते दिल खो गया। जिसको खोजता था उसी का हो गया।।
यथैधांरी समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन। ज्ञानाग्नि! सर्वकर्मणि भस्मसात्कुरुते तथां।।

हे अर्जुन, जैसे प्रज्जवालित अग्नि ईंधनों को भस्ममय कर देती है, वैसे ही ज्ञान अग्नि सम्पूर्ण कर्मों को भस्ममय कर देती है।

संत साहित्य का उद्गम अपभ्रंश साहित्य में देखा जा सकता है। संत शब्द संस्कृत की सद् धातु से बना है जिसका अर्थ है श्रेष्ठ, योग्य, सत्य को जानने वाला, जिसने अन्तिम सत्य का अनुभव कर लिया है वही सन्त है। भक्ति शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के भज् धातु से हुई है जिसका अर्थ है भजन करना अथवा भक्ति करना। आदिकाल से लेकर आज तक ईश्वर की आराधना और

विवेचना अनेकश होती रही है। कोई उसे सविशेष रूप वाला बताता है और कोई उसे निर्विशेष स्वरूप सम्पन्न कहता है। सविशेष को ही सगुण और निर्विशेष को निगुर्ण कहा गया है। उपनिषदों में भी ब्रह्म के दो रूप बताये गये हैं 'पर' और 'अवर'। 'पर' निर्गुण और 'अवर' सगुण का बोधक है। निर्गुण ब्रह्म वह है जिसकी शोभा अनुभूयमान है कथनीय नहीं। 'निर्गुण' शब्द एक ऐसी सत्ता प्रतीति होती है जो सत्, रज, तम आदि गुणों से परे होती है तथा ब्रह्म का बोध कराती है निर्गुण का सर्वप्रथम व्यवहार उपनिषदों में भी दिखाई देता है। ब्रह्म के स्वरूप को लेकर ऋग्वेद के 'नासदीय सूक्त' में विस्तृत विवेचन किया गया है। श्वेताश्क्तरोपनिषद् 'निर्गुण' का प्रयोग करते हुए कहता है –

एको देवः सर्वभूतेषु गूढसर्वव्यापी सर्व भूतान्तरात्मा कर्माहयक्षः सर्वभूतधीवासः साक्षी चेताव केवलोनिगुणरेज। श्रीमद्भगवद्गीता में निर्गुण के सम्बन्ध में कहा गया है कि वह सम्पूर्ण इन्द्रियों के विषय जानने वाला है परन्तु वास्तव में सब इन्द्रियों से रहित है। सन्त कवियों में कबीर, रैदास, नानक, दादू, नामदेव आदि ने अपने इष्ट, अपनी साधना, अपने मत सबको निर्गुण कहा है। इन सन्तों का निर्गुण से तात्पर्य ईश्वर के साकार रूप से अस्वीकृति है। सन्तों का संग, दुर्लभ, अगम्य और अमोघ है। जिस भक्त को सताने वाला, तंग करने वाला कुटुम्बी मिल जाता है समझो उसका बड़ा भाग्य है जैसे प्रहल्लाद को सताने वाला 'हिरण्यकाशिपु' न होता तो शायद प्रहल्लाद की इतनी भक्ति न होती।

जिसको वे इश्क करता है, उसी को आजमाता है।
खजाने रहमत के, इसी बहाने लुटाता है।।

सन्तों ने नाम जाप को साधना का आधार माना है। 'नाम' ही, भक्ति और मुक्ति होती है। निर्गुण ब्रह्म की भक्त वत्सलता का संकेत मुण्डकोपनिषद् में भी मिलता है।

नापमात्मा प्रवचनेन लभ्योनमेधया न बहुनाश्रुतेन।
यमेवैष वृणुते लभ्यस्तस्यैष, आत्मा विवृणुते ततुस्वाम्।।

कबीरदास

कबीरदास ज्ञानाश्रयी शाखा के निर्गुण भक्त कवि थे परन्तु उनकी निगुर्णता नहीं थी। भक्ति, कबीर की आस्था थी और उनके जीने का अभिप्राय थी। वे साधु होकर भी साधु अगृहस्थ नहीं थे, वैष्णव होकर भी वैष्णव नहीं थे, योगी होकर भी योगी नहीं थे। कबीर ने राम रस में डूबकर प्रेम भक्ति का ऐसा दृढ़ आलम्बन जनता को दिया कि वह आत्मविभोर हो उठी। कबीर दास निर्गुण निराकार ईश्वर में विश्वास रखते थे। उनके विचारानुसार ब्रह्म अनन्त अगम और अगोचर है। वह निर्गुण होकर भी सृष्टि के कण कण में समाया हुआ है, वह अजन्मा और निर्विकार है, उसे बाहर ढूँढने की आवश्यकता नहीं क्योंकि वह तो हमारे हृदय के अन्दर निवास करता है।

कस्तुरी कुंडली बसे, मृग ढूंढे वन माही।
ऐसे घट–घट राम हैं दुनियाँ देखे नाहीं।।

कबीर जी ने एक अन्य दोहे से ईश्वर की सत्ता को स्पष्ट करते हुए कहा है–

ज्यों तिल माहीं तेल, ज्यों चकमक में आगि।
तेरा साई तुझ में जागि सकै तो जागि।।

कबीर ज्ञान प्राप्ति का आधार सत्संग और गुरु को मानते हुए कहते हैं, गुरु का परमात्मा से अधिक महत्व है क्योंकि गुरु ही शिष्य को परमात्मा से मिलाता है।

गुरुगोविन्द दोऊ खड़े, काके लागौं पाय।
बलिहारी गुरु आपने जिन्ह गोविन्द दियो मिलाये।।

कबीर की भक्ति साधना मूलक है। उन्हें अखिल विश्व ब्रह्ममय दिखाई देता है।

लली मेरे लाल की, जिन देखे तित लाल।
लली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।।

कबीर की भक्ति एकेश्वरवादी है। वे तन की अपेक्षा मन को रंगने में विश्वास रखते हैं। ज्ञान उनकी साधना का केन्द्र है।

संतो गाई आई, ज्ञान की आंधी। भ्रम की ताती, संभे उड़ानी।।
माया रहे न बांधी।।

कबीरदास ने हिन्दुओं और मुसलमानों में प्रचलित बाह्यऽडम्बरों का डट कर विरोध किया। मूर्ति पूजा का विरोध करते हुए कहते हैं –

पत्थर पूजै हरि मिलै, तौ मैं पूजौ पहार।
ताते वह चाकी भली पीस खाऐ संसार।।

उसी प्रकार से वे मुसलमानों को फटकारते हुए कहते हैं –

काकंर पत्थर जोरि के मस्जिद लई बनाय।
तां चड़ि मूल्ला बांग दे बहिरा हुआ खुदाय।।

जाति–पाति का विरोध करते हुए कबीर ने भक्ति के द्वार सभी के लिए खोल दिए।

जाति–पाति पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।।

कबीर की भक्ति में ब्रह्म जिज्ञासा तथा सगुणोपासना के तत्त्वों का मिश्रण है।

कबीरदास ने अपने आपको गृह पशु तक कह डाला है। जिस राम या रघुनाथ की चर्चा की है वह निराकार और साकार का मिश्रित रूप है। वह केवल एक शक्ति है जो जीव को जैसा चाहता है वैसे कार्य करने पर विवश करती है। डोर ब्रह्म के हाथ है। कबीर जी कहते हैं –

कबिरा कूत्ता राम का, मोतिया मेरा नाम।
गले नाम की जेबड़ी, जित खैंचे तित जाव।।

कबीर के लिए आत्म शुद्धि सबसे बड़ी साधना थी। उनका धर्म यदि कोई था तो उसे मानव धर्म की संज्ञा दी जा सकती है। इनकी भक्ति सार्वकालिक, सार्वभौमिक तथा सार्वमांगलिक है। सभी का कल्याण प्रमुख तत्त्व है। कबीर जी कहते हैं कि नाम सिमरन ही सारे तत्त्वों का सार है। इसके अतिरिक्त भक्ति के सभी साधना ऐसे जाल की तरह हैं जिसमें से निकलना असम्भव है।

कबीरा सुमिरन सार है और सफल जंजाल।
आदि अंत सभ सोधिया, दूजा देखो काल।।
साबुन ला ला धोता कोला, दुद्ध दही विच पाया।
खुंम चाढ़ उस धोबी धोता, पर उसने रंग बताया।
अंग अंग लाके देखो चढ्दा रूप सबाया।।

कबीर के मतानुसार कर्म करते हुए परमात्मा को याद करो, गृहस्थ धर्म का पालन करो, सभी को समान दृष्टि से देखो, जीवों पर दया करो, आहिंसा का पालन करो।

नामदेव

नामदेव महाराष्ट्र के प्रसिद्ध सन्त हुए। यह भगवान विट्ठल के परम भक्त थे। इन्होंने ज्ञानदेव के प्रभाव से निर्गुण मार्ग को अपना लिया। नामदेव के मतानुसार ईश्वर की एकाग्रचित भक्ति से ही मनुष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। वह मूर्तिपूजा, जातपात, व्यर्थ के रीति–रिवाजों तथा बाहरी आडम्बरों के कट्टर विरोधी थे। आज भी इनके प्रेम भक्ति–रचित गीत पूरे भारत में गाये जाते हैं।

सुफल जन्म मोको गुरु कीना।
दुःख विसार सुरत अतंर दीना।
ज्ञान दान मोको गुरु दिना।
राम नाम बिना जीवन हीना।।

नामदेव ने सब मनुष्यों को समानता का समर्थन एवं जाति भेद को विरोध करते हुए कहा है –

कहा करउ जाति–कहा करउ पाती।
राम को नामु जपऊ दिन–राती।।

नाम देव भक्ति के अतिरिक्त सभी कार्यों को व्यर्थ समझते थे।

रविदास

सन्त रविदास जी भक्ति काल के प्रवर्त्तक और प्रमुख क्रान्तिकारी थे। इन्होंने अज्ञानता के अन्धकार में भटक रही जनता को भक्ति का सरल और स्पष्ट मार्ग बताया। रविदास जी ने अपनी वाणी में स्पष्ट कहा है ओम् ही परमात्मा का सत्य, मुख्य नाम है।

ओंकार कुदरत निरंकारी। सब में खेले आप खिलारी।

सन्त श्री रविदास जी ने गृहस्थ स्त्री पुरुष को ओम का जाप करने का उपदेश दिया। ओम का जप करने से भोग और मोक्ष प्राप्त होता है।

जिभ्या सो ओकांर जप, हत्थन सो करकार।
राम मिलाई घर आई कर, कहे रविदास विचार।।

रविदास ने नाथों की तरह निर्गुण ब्रह्म की कल्पना निरंजन के रूप में की है। निराकार ब्रह्म का वर्तन करते हुए कहा है –

तीरथ वरत न घरौ अंदेशा, तुम्हारे चरन कमल का भरोसा।
जहं जहं जाओ तुम्हारी पूजा, तुमसा देव और नहीं दूजा।

गुरु रविदास जी ने परमात्मा को चन्दन और अपने आप को इरंड कहा है। परमात्मा रूपी चन्दन के साथ रहकर विकारी और पापी मनुष्य भी भवसागर से पार हो जाता है। रविदास ने ईश्वर भक्ति ने नाम पर किये जाने वाले विवाद को सारहीन तथा निरर्थक तथा सबको परस्पर मिल जुल कर रहने का उपदेश दिया। वे स्वयं मधुर तथा भक्ति पूर्ण भजनों की रचना करते थे और उन्हें भाव विभोर होकर सुनाते थे। उनका विश्वास था कि राम, कृष्ण, करीम आदि एक ही परमेश्वर के विविध नाम हैं। वेद, कुरान, पुराण आदि ग्रन्थों में एक ही परमेश्वर का गुणगान किया गया है।

कृस्न करीम राम हरि राघव, जब लंग न देखा।
वेद कुरान, पुरानन सहज एक नहीं देखा।

उनका विश्वास था कि ईश्वर की भक्ति के लिए सदाचार, परहित भावना तथा सद्व्यवहार का पालन करना अत्यावश्यक है। अपने एक भजन में कहा है –

कह रैदास तेरी भक्ति दूरी है, भाग बड़े सो पावे।
तजि अभिमान मेटि आपा कर, पिपिल क हवै चुनि खावै।।

उनके विचारों का आशय यही है कि ईश्वर की भक्ति बड़े भाग्य से प्राप्त होती है। उनकी वाणी का इतना व्यापक प्रभाव पडा कि समाज के सभी वर्गों के लोग उनके प्रति श्रद्धालु बन गये। मीरा बाई उनकी भक्ति भावना से प्रभावित होकर उनकी शिष्य बन गई। इन्हीं भक्ति गुणों के कारण रैदास को अपने समाज में अत्याधिक सम्मान मिला। इसी कारण आज भी लोग इन्हें श्रद्धा पूर्वक स्मरण करते हैं।

जाति–जाति में जाति हैं, जो केतन के पात।
रैदास मनुष न जुड़ सके, जब तक जाति न जात।।

संत तुकाराम

संत तुकाराम ने भक्ति मार्ग पर विशेष बल देते हुए कहा है कि सभी मनुष्य उस परमपिता ईश्वर की सन्तान है भक्ति ज्ञान के बिना मनुष्य ऐसे हो जाता है जैसे पशु। बस अंतर इतना है कि पशु की गर्दन में रस्सी बांध कर हांका जाता है जबकि मनुष्य को मन में लालच, लोभ, मोह की रस्सी बांध कर उसे दूसरा मनुष्य हांक सकता है।

दादुदयाल

दादुदयाल ने ब्रह्म नामक सम्प्रदाय चलाया था जो दादू सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध है। इस सम्प्रदाय के लोग कोई धार्मिक चिन्ह धारण नहीं करते अपितु जप करने की सुमिरनी लिए रहते है। इन्होंने प्रेम को भगवान की जाति और रूप कहा है।

जो कुछ वेद पुराण थे अगम अगोचर बात
सो अनमै साचा कहे जाह दादू अकहि कहात।।

गुरु नानक

गुरु नानक सिक्खों के प्रथम गुरु थे। गुरू नानक ने ईश्वर के लिए औंकार तथा सतिनाम शब्द का चयन औषनिषदिक परम्परा से किया है।

एको देवाः सर्वभूतेषु गूठ : सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा।।

गुरु नानक देव जी ने निरंकार को ही अपना गुरु माना है तथा उसे ही अपनी साधना सिद्धि तथा लक्ष्य माना।

इक ओंकार सतनाम करता, पुरख निरभऊ।
निजू बैर अकाल मूरत अजूनी सैभंग गुरु प्रसादि।।

गुरुनानक जी ने सतनाम के जप पर बल दिया। जो सतनाम का जाप नहीं करता वह जीवन मरण के चक्कर में पड़ा रहता है। उस परमात्मा की प्राप्ति सत्संग से होती है। सत्संग के बिना कितने भी कर्म करो, कितने भी यज्ञ करो, कितने भी तप करो, व्रत करो सब व्यर्थ हैं।

आदि सचुं जुगादि सचु है भी सचु–नानक होसी भी सचु।।

गुरुनानक ने जाति–पाति का विरोध करते हुए कहा– भगवान को हमारी जाति अथवा जन्म से कोई सरोकार नहीं। हम सब सत्यमय जीवन बिताना सीखें क्योंकि मनुष्य के कार्य उसकी जाति एवं सम्मान के प्रतीक हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कबीर एक ही ईश्वर को मानते थे और कर्मकाण्ड के घोर विरोधी थे। अवतार, मूर्ति, रोज़ा, ईद, मन्दिर आदि को नहीं मानते थे। कबीर परमात्मा को मित्र, माता, पिता और पति के रूप मे देखते हैं, यही तो मनुष्य के निकट रहते हैं। कबीर नाम में विश्वास रखते है रूप में नहीं। कबीर का आशय इस शब्द से सिर्फ इतना ही है कि ईश्वर को किसी नाम रूप गुण, काल की सीमाओं में बाँधा नहीं जा सकता। कबीर की प्रभु–भक्ति सारे समाज में प्रसिद्ध हो गई। कबीर जी की प्रतिष्ठा को लोगों ने दबाना चाहा पर वे दबा न सके।

अब्बल अल्लाह नूर उपाइया, कुदरति के सब बंदे
एकनूर ते सब जग उपजिआ, कऊन भले को मंदे।।

रविदास जी अपनी पवित्र वाणी के द्वारा इस अटल सच्चई का वर्णन करते हैं कि तरह सूरज का प्रकाश होने से रात का अन्धेरा क्षण में ही खत्म को जाता है, ठीक उसी तरह जब लोहे को पारस लगाया जाता है तो वह सोने में बदल जाता है। जब मानव के अन्दर गुरुकृपा और भक्ति हो तो अज्ञानता मिट जाती है। जिस प्रकार रात दिन सांसारिक सुखों की प्राप्ति के लिए तुम लालायित रहते हो उसी प्रकार अगर परमात्मा को पहचानना हो, उसकी कृपा को दिव्य रूप में पाना हो तो सासांरिक लालसा से मन हटाकर उसे पहचाने की लालसा को अपने मन में जगाओ तो तुम्हारा जीवन सुखों से भर जायेगा।

शील की रॉपी ज्ञान का कांटा, चाम की पन्नी प्रेम का टांका।।

जब पाखण्डों और निरर्थक कर्मकाण्डों के बीच समाज बुरी तरह फंस गया था तब गुरुनानक जी ने पथ–भ्रष्ट लोगों को आर्दश जीवन का मार्ग दिखाया। उन्होंने कर्मकाण्ड़ और शास्त्रीय विधि विधानों से जकड़ी हुई उपासना की रूढि ग्रस्त औपचारिकता के कष्टप्रद भार को दूर किया और युगधर्म, आविराम स्मरण की साधना, सभी प्राणीयों की सेवा और सदानारमय जीवन की घोषणा कर भगवद् साक्षात्कार के लिए आध्यात्मिक उपगमन का सीधा और सरल उपदेश दिया।

सन्तों ने भक्ति के जिस पथ का निर्देश दिया वह वर्तमान युग में हम सबक लिए सर्वोत्कृष्ट वरदान है।

जिसको वे इश्क करता है उसी को आजमाता है,
खजाने रहमत के, इसी बहाने लुटाता है।।